3

मुख्य वचनः मत्ती 28:18

प्रभु भोज के लिए अधिकार

मसीही लोगों को प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज लेने का अधिकार किस ने दिया? क्या यह भोज मनुष्य की बनाई हुई रीति है या परमेश्वर की ओर से दी गई आज्ञा?

यीशु हमारा राजा, जो राज करता है

मसीही युग में यीशु को स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है (मत्ती 28:18)। स्वर्ग में जाकर परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठने के बाद उसे हर चीज़ पर अधिकार दे दिया गया। हम पढ़ते हैं:

> जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर जाने वाले लोक में भी लिया जाएगा, और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहरा कर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है (इफिसियों 1:20-23)।

उसने दानिय्येल की भविष्यवाणी को पूरा किया, जिसने पांच सौ साल पहले ही उसके स्वर्गारोहण, उसके महिमा पाने और सभी राजाओं के ऊपर उसके राज्य की भविष्यवाणी की थी (दानिय्येल 7:13, 14)।

ऊपर उठा लिए जाने के बाद यीशु दाऊद के सिंहासन से शासन करने लगा, जो अब उसका सिंहासन है। उसका अधिकार अब एक भविष्यवक्ता और राजा का है।[1] जकर्याह ने यह भविष्यवाणी की थी कि यीशु अपने सिंहासन पर याजक के रूप में होगा, यानी उसने याजक और राजा दोनों एक ही समय पर (जकर्याह 6:13) होना था। वह पृथ्वी पर एक याजक के रूप में काम नहीं कर सका (इब्रानियों 8:4) और अब राजा और याजक के रूप में उसका राज्य स्वर्ग का है, न कि पृथ्वी का। वह अब परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठकर शासन कर रहा है।[2] वह सब हाकिमों और अधिकारों से ऊपर है क्योंकि सब कुछ उसके पांवों के नीचे है (1 कुरिन्थियों 15:27)।

यीशु मसीहियत का देने वाला और संस्थापक

उद्धार की बात पहले मसीह के द्वारा की गई (इब्रानियों 2:3)। वह मसीही विश्वास और व्यवहार का देने वाला है (इब्रानियों 2:10ख; 12:2)। यदि उसने कुछ कहा है तो उसे करना

चाहिए। यदि नहीं कहा तो उसे नहीं करना चाहिए। जो आज्ञाएं उसे पिता से मिलीं (यूहन्ना 12:49, 50) उसने वे आज्ञाएं अपने शब्दों में चेलों को दे दीं (यूहन्ना 17:8, 14) और बाद में ऊपर उठा लिए जाने के बाद पवित्र आत्मा के द्वारा दीं (यूहन्ना 14:26; 16:7-14)।

यीशु की आज्ञाएं जो नये नियम में प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के लेखों में मिलती हैं, परमेश्वर का वचन हैं। क्योंकि इन अन्तिम दिनों में परमेश्वर ने हमारे साथ यीशु के द्वारा बातें की हैं (इब्रानियों 1:1, 2) और हमें उसे सुनना आवश्यक है। हम में से जो उसकी नहीं सुनेगा, उसका नाश होगा।

यीशु अपनी कलीसिया का बनाने वाला है और एकमात्र वह आधार है, जिसके ऊपर यह बनी है। इसे अपने आप को उसे सौंपना है (इफिसियों 5:24)। वही एकमात्र ''सिर'' (कुलुस्सियों 1:18) और व्यवस्था का देने वाला है (याकूब 4:12)। सब लोगों का न्याय उसी के द्वारा होगा (5:22; 2 कुरिन्थियों 5:10; प्रेरितों 17:31)।

यीशु, हमारा निर्देश देने वाला

यीशु के अधिकार को मानने के कुछ मूल सिद्धांत हैं। जब इनको नहीं माना जाता तो यीशु को वह सम्मान नहीं मिलता जिसके वह योग्य है।

(1) उसके मानने वालों को उसकी आज्ञाओं को मानना चाहिए और उससे आगे नहीं जाना चाहिए जैसा लिखा है (मत्ती 28:20; 1 कुरिन्थियों 4:6; 2 यूहन्ना 9; देखें याकूब 1:22)।

(2) पवित्र आत्मा के द्वारा सत्य का मार्ग बताया गया है जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है (यूहन्ना 16:13; 2 पतरस 1:3)।

(3) अपनी बुद्धि और योग्यता से पवित्र आत्मा के द्वारा उसने सब लोगों को सत्य का मार्ग शब्दों में बताया है, जो समझने में आसान है (1 कुरिन्थियों 2:12, 13; 2 कुरिन्थियों 1:13; इफिसियों 3:3-5)।

(4) इस तथ्य के आधार पर कि उसने वह सब प्रगट कर दिया जो वह करना चाहता था उसे तोड़ना या मरोड़ना नहीं चाहिए (2 कुरिन्थियों 4:2; 2 पतरस 3:16, 17)।

(5) जो लोग ऐसा सिखाते हैं उन्हें दोषी ठहराया जाएगा (गलातियों 1:8, 9), उनका नाश होगा (प्रेरितों 3:22, 23)। किसी को भी उसकी शिक्षा में कुछ जोड़ने या उसमें से कुछ निकालने का अधिकार नहीं है।

(6) उसकी शिक्षा को परमेश्वर के वचन के रूप में देखा जाना चाहिए न कि मनुष्य के वचन के रूप में (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)।

(7) प्रगट किया गया वचन सारी शिक्षा का आधार है क्योंकि वह परमेश्वर के लोगों को हर आवश्यक चीज़ उपलब्ध कराता है (यूहन्ना 16:13; 2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

(8) क्योंकि उसने सब सत्य बताया है यह सम्पूर्ण है (याकूब 1:25)। परमेश्वर ने जो एक बार बोला, उसमें कुछ और नहीं जोड़ा।

प्रभु भोज का अधिकार यीशु द्वारा प्रेरितों को दिए गए निर्देशों (मत्ती 26:26-28; मरकुस 14:22-24; लूका 22:17-20) तथा पौलुस दिए गए प्रकाशन पर आधारित है (1 कुरिन्थियों 10:16-21; 11:23-34)। क्योंकि जब यीशु ने चेलों को प्रभु भोज की परम्परा दी, कुछ विद्वान

मानते हैं कि उसे यह निर्देश चेलों से मिला, लेकिन सच यह है कि यीशु ने पौलुस को पवित्र आत्मा के द्वारा यह निर्देश दिया जैसे उसने दूसरे प्रेरणा पाए लोगों के साथ किया (इफिसियों 3:3-5)। लियोन मौरिस ने ठीक अवलोकन किया, ''पौलुस प्रेरित को परमेश्वर द्वारा प्रकाशन के कई उदाहरण मिलते हैं'' [प्रेरितों 18:9, 10; 22:18; 23:11; 27:23-25; गलातियों 1:12; 2:2; 2 कुरिन्थियों 12:7]। ऐसा लगता है कि यह भी वैसा ही एक और मामला है।[3]

सारांश

मसीही युग में स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार यीशु को दिया गया है (मत्ती 28:18)। उसका फैसला हर मामले में अटल है। जो लोग उसे सुनते और मानते हैं वे एक ऐसे मकान की तरह हैं जो चट्टान पर बनाया गया है, जिसे कोई भी आपदा नहीं गिरा सकती। जो उसे नहीं मानते उस मकान की तरह हैं जो रेत पर बनाया गया और जैसे ही कोई तूफ़ान आया, गिर गया (मत्ती 7:24-27)।

टिप्पणियां

[1]भविष्यवक्ता, याजक और राजा के रूप में यीशु की भमिकाओं के सम्बन्ध में, देखें प्रेरितों 3:22, 23; इब्रानियों 3:1; 4:14; 6:20; 8:1; यशयाह 9:6, 7; लूका 1:32, 33; यूहन्ना 18:37; 1 तीमुथियुस 6:13-16; प्रकाशितवाक्य 3:21; 17:14; 19:16. [2]देखें प्रेरितो 2:33; 5:31; रोमियों 8:34; कुलुस्सियों 3:1; इब्रानियों 1:3; 8:1; 12:2; 1 पतरस 3:22. [3]लियोन मौरिस, द *फर्स्ट एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द क्रोरिन्थियन्स* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1958), 159.